एम. पी. पीसीएस

खंड - अ

प्रश्न: 1. इस प्रश्न में 15 अतिलघुत्तरीय उप-प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न हेतु आदर्श शब्द सीमा 20 शब्द होगी। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न 02 (दो) अंकों का है।

प्रश्न (1.1) पुरुषार्थ क्या है तथा इसके कितने प्रकार होते हैं?

उत्तर: पुरुषार्थ का अर्थ है विवेकशील प्राणी का लक्ष्य। इसके चार प्रकार हैं – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

प्रश्न (1.2) भारत की भाषाओं को मुख्यत: किन-किन भाषा परिवारों में वर्गीकृत किया गया है?

उत्तर: भारत की भाषाओं को मुख्यत: चार भाषा परिवारों में वर्गीकृत किया गया है: भारोपीय (Indo-European), द्रविड़, ऑस्ट्रो-एशियाई, और चीनी-तिब्बती

प्रश्न (1.3) ग्रामीण युवा स्वरोजगार प्रशिक्षण कार्यक्रम (TRYSEM) का उद्देश्य क्या था?

उत्तर: TRYSEM का उद्देश्य ग्रामीण गरीब युवाओं को कृषि, उद्योग व व्यवसाय हेतु कौशल देकर आत्मनिर्भर स्वरोजगार योग्य बनाना था।

प्रश्न (1.4) कुल प्रजनन दर क्या है?

उत्तर: कुल प्रजनन दर वह औसत संतान संख्या है जो प्रत्येक महिला अपने जीवनकाल में जन्म देती है। जनसंख्या स्थिर रखने हेतु यह दर लगभग 2.1 होनी चाहिए।

प्रश्न (1.5) अगरिया

उत्तर: अगरिया गोंड जनजाति की एक शाखा है जो पारंपरिक रूप से लोहा गलाने का कार्य करती है और 'लोहासुर' देवता की पूजा करती है।

प्रश्न (1.6) निष्क्रमण संस्कार क्या है?

उत्तर: निष्क्रमण संस्कार वह संस्कार है जिसमें शिशु को पहली बार घर से बाहर ले जाया जाता है। इस संस्कार के पहले तक शिशु और माँ को घर से बाहर जाने की अनुमति नहीं दी जाती।

प्रश्न (1.7) सफेदपोश अपराध किसे कहते हैं? इनके मुख्य उदाहरण क्या हैं?

उत्तर: सफेदपोश अपराध आर्थिक रूप से सुरक्षित लोगों द्वारा कार्यक्षेत्र में किए गए अनैतिक अपराध हैं; जैसे- मनी लॉन्ड्रिंग, कर चोरी।

प्रश्न (1.8) जल जीवन मिशन का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर: जल जीवन मिशन का उद्देश्य 2019 से प्रत्येक ग्रामीण घर में नल के माध्यम से शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराना है।

प्रश्न (1.9) 2008 में गठित यशपाल समिति के कोई दो उद्देश्य बताइए?

उत्तर: **यशपाल समिति के दो प्रमुख उद्देश्य:**

1. भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली की समस्याओं की पहचान करना।
2. नियामक संस्थाओं जैसे UGC और AICTE के पुनर्गठन की सिफारिश करना।

ChronicleIAS

प्रश्न (1.10) गोत्र क्या है और यह हिंदू समाज व्यवस्था में क्यों महत्त्वपूर्ण है?

उत्तर: गोत्र हिंदू समाज में पितृवंशीय वंश या कुल को दर्शाता है। यह विवाह संबंधों में रक्त संबंधों से बचाव हेतु महत्त्वपूर्ण सामाजिक नियम है।

प्रश्न (1.11) एक राष्ट्र की प्रमुख विशेषताएँ कौन-कौन सी होती हैं?

उत्तर: राष्ट्र की प्रमुख विशेषताएँ हैं- निश्चित भूभाग, साझा सरकार, संप्रभुता, नागरिक, राष्ट्रीयता तथा प्रतीक जैसे झंडा व राष्ट्रगान।

प्रश्न (1.12) अंतर-राज्य प्रवासी मजदूर अधिनियम, 1979 के अंतर्गत ठेकेदार के लिए कौन-कौन सी बाध्यताएँ निर्धारित हैं?

उत्तर: अधिनियम के अंतर्गत ठेकेदार को लाइसेंस लेना, मजदूरी शर्तें स्पष्ट करना तथा श्रमिकों का पंजीकरण अनिवार्य है।

प्रश्न (1.13) 1951 से 1981 तक भारत में जनसंख्या वृद्धि की क्या प्रवृत्ति रही और यह अवधि जनसंख्या विस्फोट क्यों कहलाती है?

उत्तर: 1951-81 में जनसंख्या वृद्धि दर औसतन 2.15% रही, जिससे तीव्र वृद्धि हुई; इसे जनसंख्या विस्फोट काल माना गया।

प्रश्न (1.14) जैन धर्म के पंच महाव्रत कौन-कौन से हैं और उनके क्या अर्थ हैं?

उत्तर: **जैन धर्म के पंच महाव्रत:**

(i) **अहिंसा** - हिंसा न करना
(ii) **सत्य** - असत्य न बोलना
(iii) **अस्तेय** - जो न दिया गया हो उसे न लेना
(iv) **अपरिग्रह** - सांसारिक वस्तु का त्याग
(v) **ब्रह्मचर्य** - अविवाहित जीवन

प्रश्न (1.15) भारत में उदारीकरण के तहत किए गए प्रमुख आर्थिक सुधार कौन-से थे?

उत्तर: उदारीकरण में श्रम कानून शिथिल किए गए, आयात-निर्यात प्रतिबंध घटाए गए तथा निर्यात कर और सीमा शुल्क कम किए गए।

Chanakya IAS

एम. पी. पीसीएस

प्रश्नः 2. इस प्रश्न में 10 लघुत्तरीय उप-प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर हेतु आदर्श शब्द सीमा 60 शब्द होगी। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न 07 (सात) अंकों का है।

प्रश्न (2.1) वानप्रस्थ आश्रम की विशेषताओं तथा उसमें व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले कर्तव्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तरः वानप्रस्थ आश्रम जीवन का तीसरा चरण है, जिसमें 50 से 75 वर्ष की आयु तक व्यक्ति गृहस्थ जीवन त्यागकर वन में निवास करता है। वह भौतिक सुखों का त्याग कर, इन्द्रियों पर नियंत्रण स्थापित करता है। वानप्रस्थी सदाचारी, आत्मनियंत्रित एवं दयालु होता है। वह विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा देता है तथा वेदों का अध्ययन करता है। जमीन पर सोना, फलाहार करना और आत्मचिंतन इस आश्रम की विशेषताएँ हैं, जिससे व्यक्ति सन्यास के लिए स्वयं को तैयार करता है।

प्रश्न (2.2) भारतीय संदर्भ में घरेलू हिंसा की समस्या पर प्रकाश डालते हुए इसके प्रमुख कारणों एवं वर्तमान विधिक उपायों का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

उत्तरः भारतीय समाज में घरेलू हिंसा एक गम्भीर सामाजिक समस्या है, जो मुख्यतः पितृसत्तात्मक सोच, अशिक्षा, आर्थिक निर्भरता एवं शराब सेवन जैसे कारणों से उत्पन्न होती है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) 2022 के अनुसार, महिलाओं के प्रति दर्ज अपराधों में से लगभग 31% घरेलू हिंसा से संबंधित थे। इससे निपटने हेतु घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम, 2005 लागू किया गया है, जो पीड़ित महिलाओं को सुरक्षा, आवास एवं परामर्श जैसी सुविधाएँ प्रदान करता है।

प्रश्न (2.3) भारत में प्रवासी मजदूर किसे कहा जाता है? आंतरिक प्रवासन की प्रवृत्तियाँ, प्रमुख राज्य तथा संबंधित आँकड़ों का उल्लेख कीजिए।

उत्तरः प्रवासी मजदूर वे व्यक्ति होते हैं जो कार्य की तलाश में अपने देश के भीतर या बाहर प्रवास करते हैं। भारत में अधिकतर प्रवासी मजदूर आंतरिक प्रवासन में संलग्न होते हैं, जिनके प्रमुख मूल राज्य उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, झारखंड आदि हैं, जबकि महाराष्ट्र, दिल्ली, गुजरात जैसे राज्य प्रमुख गंतव्य हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार देश में आंतरिक प्रवासियों की संख्या 36 करोड़ थी, जबकि 2016 के आर्थिक सर्वेक्षण अनुसार प्रवासी कार्यबल 10 करोड़ से अधिक था।

प्रश्न (2.4) भारत में औद्योगीकरण और सामाजिक परिवर्तन के कौन-कौन से नकारात्मक प्रभाव देखने को मिले हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः भारत में औद्योगीकरण और सामाजिक परिवर्तन ने नगरीकरण को बढ़ावा दिया, जिससे जनसंख्या घनत्व, आवास व भोजन की कमी जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुईं। बाल श्रम बढ़ा, जिससे शिक्षा प्रभावित हुई। समाज में जातीय व्यवस्था के स्थान पर श्रम आधारित वर्ग विभाजन हुआ। महिलाओं को कार्यस्थल पर शोषण और घरेलू असंतुलन का सामना करना पड़ा। इन परिवर्तनों ने सामाजिक ढांचे को अस्थिर किया और नई समस्याओं को जन्म दिया।

प्रश्न (2.5) कोरकू जनजाति द्वारा मनाए जाने वाले सिदोली अनुष्ठान की विशेषताएँ क्या हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः कोरकू जनजाति अपने मृत पूर्वजों को देवता मानती है। वे मृतक की स्मृति में लकड़ी के स्तंभ बनाते हैं, जिन्हें मांडो या मांडा कहा जाता है। इन्हें स्थापित करने की प्रक्रिया को सिदोली कहा जाता है। यह अनुष्ठान पौष माह में तीन से चार दिन तक चलता है। इसमें परिवारजन वन में पूर्णतः हरे सागौन वृक्ष पर मौली बांधते हैं और पूर्वजों सोमा-दोमा का स्मरण करते हैं।

एम. पी. पीसीएस

प्रश्न (2.6) मानव जीवन में संस्कृति का क्या महत्त्व है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: मानव जीवन में संस्कृति अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह न केवल उसकी शारीरिक, मानसिक व सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती है, बल्कि उसके व्यक्तित्व निर्माण में भी सहायक होती है। संस्कृति व्यक्ति को नैतिक मूल्य, आदर्श, उचित-अनुचित की पहचान कराती है तथा उसकी आदतों एवं व्यवहारों को एकरूपता प्रदान करती है। यह व्यक्ति को सामाजिक सुरक्षा देती है और जीवन की समस्याओं का समाधान सांस्कृतिक अनुभवों व परंपराओं के आधार पर सहज रूप से संभव बनाती है।

प्रश्न (2.7) भारत की जनांकिकीय विविधता के प्रमुख पहलुओं का वर्णन करें एवं इसके सामाजिक-आर्थिक विकास पर प्रभाव स्पष्ट करें।

उत्तर: भारत की जनांकिकीय विविधता जनसंख्या के आकार, आयु-संरचना, भाषायी, धार्मिक व जातीय विविधताओं में परिलक्षित होती है। 2025 में भारत की जनसंख्या लगभग 1.46 अरब है, जिसमें कार्यशील आयु वर्ग (15 - 64 वर्ष) लगभग 68% है। यहाँ 22 अनुसूचित भाषाएँ, विभिन्न धर्म एवं जातीय समूह हैं। यह विविधता एक ओर आर्थिक विकास हेतु मानव संसाधन की शक्ति प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक समरसता, संसाधन वितरण व नीति-निर्माण में चुनौतियाँ उत्पन्न करती है।

प्रश्न (2.8) नगर नियोजन को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक कौन-कौन से हैं? उनके प्रभावों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर: नगर नियोजन को जनसंख्या, अर्थव्यवस्था, भूगोल, पर्यावरण, सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा तकनीकी कारक प्रभावित करते हैं। जनसंख्या वृद्धि संसाधनों पर दबाव डालती है। आर्थिक विकास से भूमि उपयोग प्रभावित होता है। भौगोलिक परिस्थितियाँ निर्माण को दिशा देती हैं। पर्यावरणीय संरक्षण और सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति आवश्यक है। सरकार की नीतियाँ और नागरिकों की भागीदारी नियोजन को दिशा देती हैं। तकनीकी प्रगति स्मार्ट शहरों और संसाधन प्रबंधन में सहायक होती है।

प्रश्न (2.9) भारत भवन की स्थापना, उद्देश्य एवं प्रमुख घटकों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर: भारत भवन की स्थापना 13 फरवरी 1982 को भोपाल में हुई थी। इसका उद्देश्य विभिन्न रचनात्मक कलाओं के संरक्षण, विकास और प्रोत्साहन को राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देना है। इसका डिजाइन चार्ल्स कोरिया द्वारा किया गया था और उद्घाटन इंदिरा गांधी ने किया था। इसके प्रमुख भाग हैं: रूपांकर (ललित कला संग्रहालय), रंग मंडल, वागर्थ, अनहद, छवि और निराला सृजन पीठ। भवन में तीन ऑडिटोरियम, संगीत कक्ष व पुस्तकालय भी हैं।

प्रश्न (2.10) भारिया जनजाति के प्रमुख त्यौहारों और सांस्कृतिक परंपराओं का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर: भारिया जनजाति की संस्कृति में त्योहारों का विशेष महत्व है। वे मंडा व खजूर पत्तों से घर की सजावट तथा दुल्हा-दुल्हन का निर्माण करते हैं। बिदरी में धरती, बादल व बीज की पूजा होती है। नवाखानी में नए अन्न व पूर्वजों की पूजा होती है। जवारा, दीपावली, गोवर्धन, और होली जैसे पर्व

एम. पी. पीसीएस

प्रश्नः 3. इस प्रश्न में 05 दीर्घ उत्तरीय उप-प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर हेतु आदर्श शब्द सीमा 200 शब्द है। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न 10 (दस) अंकों का है।

प्रश्न (3.1) संयुक्त परिवार की विशेषताओं, उसकी सामाजिक भूमिका तथा विघटन के कारणों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर: संयुक्त परिवार भारतीय सामाजिक व्यवस्था की आधारशिला रहा है, जिसमें तीन-चार पीढ़ियाँ एक साथ रहती हैं, साझा रसोई और सम्पत्ति होती है, तथा सांस्कृतिक परम्पराओं का सामूहिक पालन किया जाता है। इसमें सभी सदस्य एक दूसरे के उत्तरदायित्वों में सहभागी होते हैं, और एक समाजवादी संरचना में कार्य विभाजन होता है। यह संरचना सामाजिक सुरक्षा, बच्चों के पालन-पोषण, बुजुर्गों की देखभाल और परम्पराओं के संरक्षण में सहायक रही है।

किन्तु आधुनिक समय में संयुक्त परिवारों का विघटन तीव्र गति से हुआ है। इसके प्रमुख कारण हैं:

- औद्योगीकरण, शहरीकरण, शिक्षा का प्रसार, रोजगार हेतु स्थान परिवर्तन, स्त्रियों की आर्थिक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बढ़ती आकांक्षा।
- संयुक्त परिवार की कठोर अनुशासनात्मक संरचना नई पीढ़ी की स्वतंत्र सोच से टकराती है, जिससे तनाव उत्पन्न होता है।
- इसके अतिरिक्त, संयुक्त परिवारों में स्थान की कमी, निजी जीवन का अभाव, और आर्थिक असमानता जैसे कारण भी विघटन को जन्म देते हैं।

हालांकि संयुक्त परिवार अब भी भारतीय मूल्यों और संस्कृति का प्रतीक है, परन्तु सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार एकल परिवारों का उदय स्वाभाविक प्रतीत होता है।

अथवा/OR

प्रश्न (3.1) आधुनिकता केवल भौतिक प्रगति नहीं, बल्कि सामाजिक मूल्यों, संस्थाओं एवं व्यवहारों में व्यापक परिवर्तन की प्रक्रिया है। इस कथन के आलोक में आधुनिकता की प्रमुख विशेषताओं तथा भारतीय समाज पर उसके प्रभावों की विवेचना कीजिए।

उत्तर: आधुनिकता केवल भौतिक प्रगति का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन के प्रत्येक पक्ष में व्यापक परिवर्तन की बहुआयामी प्रक्रिया है। यह परंपरागत समाज से आधुनिक औद्योगिक समाज की ओर संक्रमण को दर्शाती है।

- इसकी प्रमुख विशेषताओं में तर्कवाद, वैज्ञानिक सोच, व्यक्तिवाद, धर्मनिरपेक्षता, उपयोगितावाद, तकनीकी नवाचार, शिक्षा का प्रसार तथा अर्जित स्थिति का महत्व शामिल हैं, जो समाज को गति और नवीन दिशा प्रदान करते हैं।
- भारतीय समाज में आधुनिकता का प्रवेश औपनिवेशिक शासन, पश्चिमी शिक्षा, औद्योगीकरण, सामाजिक सुधार आंदोलनों और संवैधानिक लोकतंत्र के माध्यम से हुआ।
- इसके प्रभावस्वरूप जातिगत असमानताओं, लैंगिक भेदभाव और रूढ़िवादी परंपराओं में गिरावट आई। साथ ही, स्त्री शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, मानवाधिकारों और लोकतांत्रिक मूल्यों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। मध्यम वर्ग का उदय, रोजगार के नए अवसरों की प्राप्ति, और पारिवारिक संरचनाओं में परिवर्तन भी इसके महत्वपूर्ण परिणाम हैं।
- हालाँकि, आधुनिकता ने कुछ नकारात्मक प्रभाव भी उत्पन्न किए हैं। पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों का क्षरण, सामाजिक विघटन, उपभोक्तावाद, मानसिक तनाव, पर्यावरणीय संकट और सामाजिक असमानता में वृद्धि इसके दुष्परिणाम हैं।

अतः आधुनिकता एक दोधारी प्रक्रिया है, जो एक ओर विकास और प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती है, वहीं दूसरी ओर परंपरागत सामाजिक ताने-बाने को चुनौती देती है। इसके विवेकपूर्ण और समावेशी क्रियान्वयन से ही समाज का संतुलित एवं समग्र विकास संभव है।

एम. पी. पीसीएस

प्रश्न (3.2) "ग्रामीणवाद न केवल एक विकासात्मक अवधारणा है, बल्कि यह सामाजिक न्याय और स्वावलंबन की ओर भी अग्रसर करता है।" इस कथन के प्रकाश में ग्रामीणवाद की प्रमुख विशेषताओं और उसकी प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।

उत्तर: ग्रामीणवाद एक सामाजिक एवं विकासात्मक दर्शन है, जो ग्रामीण क्षेत्रों की समृद्धि, स्वावलंबन, और सामाजिक न्याय को केंद्र में रखता है। यह विचारधारा स्थानीय स्तर पर विकास की संकल्पना को सशक्त करती है और ग्रामीण समुदायों को उनके निर्णयों में स्वायत्तता प्रदान करने की वकालत करती है।

- इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में समावेशी विकास को सुनिश्चित करना है, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, पर्यावरण संरक्षण, रोजगार सृजन और स्थानीय उद्यमिता की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है।
- ग्रामीणवाद के अनुसार, संसाधनों का न्यायसंगत वितरण सामाजिक समानता का आधार है, जिससे समाज में सामाजिक न्याय की स्थापना होती है।
- ग्रामीणवाद की विशेषताएं जैसे – स्थानीय उन्नति की प्राथमिकता, स्वावलंबन, सामाजिक समावेश, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और कृषि आधारित विकास – इसे एक समग्र और सतत विकास मॉडल बनाती हैं।
- यह केवल आर्थिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक मूल्यों और पर्यावरणीय संतुलन को भी महत्त्व देती है।

आज के परिप्रेक्ष्य में, जब शहरीकरण, असमानता और पर्यावरणीय संकट तेजी से बढ़ रहे हैं, ग्रामीणवाद एक वैकल्पिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो समावेशी, सतत विकास और सामाजिक न्याय की दिशा में उपयोगी सिद्ध हो सकता है। यह ग्रामीण भारत को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करता है।

अथवा/OR

प्रश्न (3.2) "वैश्वीकरण के लाभों के साथ-साथ उससे उत्पन्न चुनौतियों का भी विस्तृत वर्णन कीजिए। विशेष रूप से सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्तर पर इसके प्रभावों का विश्लेषण करें।"

उत्तर: वैश्वीकरण ने देशों के बीच आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संबंधों को प्रगाढ़ किया है, जिससे व्यापार, निवेश और तकनीकी आदान-प्रदान में वृद्धि हुई है। हालांकि इसके साथ कई गंभीर चुनौतियाँ भी सामने आई हैं।

- अंतरराष्ट्रीय भर्ती के संदर्भ में, कंपनियों को विदेशी कर्मचारियों की योग्यता की जांच, सांस्कृतिक उपयुक्तता, वेतन संरचना और स्थानीय श्रम कानूनों की समझ विकसित करनी होती है।
- आप्रवासन संबंधी जटिलताएं, जैसे अमेरिका में H -1B वीजा प्रतिबंध और ब्रेक्सिट के बाद यूके की सख्त नीतियाँ, वैश्विक विस्तार में प्रमुख बाधाएं बन गई हैं।
- निर्यात शुल्क और टैरिफ वैश्विक व्यापार की लागत बढ़ाते हैं और विदेशी बाजारों में प्रतिस्पर्धा को प्रभावित करते हैं। साथ ही, पेरोल प्रबंधन और कर कानूनों का पालन भी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए जटिल कार्य होता है।
- सांस्कृतिक पहचान की हानि से वैश्विक विविधता पर संकट उत्पन्न होता है। एकरूपता की प्रवृत्ति स्थानीय परंपराओं को कमजोर करती है।
- इसके अतिरिक्त, विदेशी श्रमिकों का शोषण, खासकर विकासशील देशों में, सस्ते श्रम की तलाश में नैतिक और मानवाधिकार संकट को जन्म देता है।
- राष्ट्रवाद का उभार और स्थानीय नौकरियों के नुकसान से राजनीतिक अस्थिरता भी बढ़ी है।
- अत: वैश्वीकरण की चुनौतियों से निपटने के लिए संतुलित, न्यायपूर्ण और समावेशी नीतियों की आवश्यकता है जो स्थानीय स्वायत्तता और वैश्विक सहयोग दोनों को सुदृढ़ करें।

एम. पी. पीसीएस

प्रश्न (3.3) सामुदायिक विकास कार्यक्रम की विफलता के प्रमुख कारणों का विश्लेषण करते हुए बताइए कि इन कमियों को दूर करने के लिए कौन-से सुधारात्मक उपाय किए जा सकते हैं?

उत्तर: सामुदायिक विकास कार्यक्रम 1952 में ग्रामीण भारत के सर्वांगीण विकास हेतु आरंभ किया गया था, किंतु इसकी सफलता सीमित रही। इसकी विफलता के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:

1. **जन सहयोग का अभाव:** ग्रामीण जनता कार्यक्रम के उद्देश्य एवं लाभों को समझ नहीं पाई, जिससे श्रमदान व भागीदारी सीमित रही।
2. **सरकारी सहायता पर निर्भरता:** स्थानीय संसाधनों व पहल के अभाव में योजना सरकारी अनुदान पर आश्रित हो गई।
3. **नौकरशाही का वर्चस्व:** योजना का क्रियान्वयन उच्चाधिकारियों के आदेशों तक सीमित रह गया, जिससे जमीनी स्तर पर प्रभावी कार्य नहीं हो पाया।
4. **प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की कमी:** तेजी से बढ़ते विकास खण्डों के अनुपात में प्रशिक्षित कार्यकर्ता उपलब्ध नहीं हो सके।
5. **सांस्कृतिक बाधाएं:** भाग्यवाद, कर्मकांड और प्रशासन पर अविश्वास जैसे कारकों ने भागीदारी को बाधित किया।
6. **असमान लाभ वितरण:** अधिकांश लाभ बड़े व प्रभावशाली किसानों को मिले, जिससे सामाजिक विषमता और बढ़ी।
7. **स्थानीय नेतृत्व का अभाव:** ग्रामीण नेतृत्व विकसित न हो पाने से जनसहभागिता सुनिश्चित नहीं हो सकी।
8. **पूंजीवादी कृषि को बढ़ावा:** समाजवादी लक्ष्य होते हुए भी कृषि प्रणाली अधिक पूंजीवादी बन गई।

सुधार: जन-जागरूकता अभियान, स्थानीय नेतृत्व का निर्माण, पारदर्शी लाभ वितरण, प्रशिक्षण केंद्रों की संख्या में वृद्धि, और विकेंद्रीकरण जैसे उपायों से कार्यक्रम की पुनर्स्थापना संभव है।

अथवा/OR

प्रश्न (3.3) समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से मूल्य (Values) क्या हैं? उनके प्रकार और समाज में महत्व की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: मूल्य वे आदर्श होते हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि क्या अच्छा, वांछनीय या सही है। ये समाज और व्यक्ति के व्यवहार को दिशा प्रदान करते हैं तथा सामाजिक जीवन में एकरूपता, स्थायित्व और नियंत्रण बनाए रखते हैं। मूल्य समाज के उच्च कोटि के मानदंड होते हैं, जो यह निर्धारित करते हैं कि कौन-सा आचरण अपेक्षित और स्वीकार्य है।

मूल्यों के प्रकार:

1. **नैतिक मूल्य:** ये समाज द्वारा स्वीकृत आचार संहिता से जुड़े होते हैं जैसे - माता-पिता का सम्मान करना, चोरी न करना। इनका उल्लंघन समाज में निंदनीय माना जाता है।
2. **बुद्धिसंगत मूल्य:** ये तर्क एवं वैज्ञानिक सोच से प्रेरित होते हैं। आधुनिक समाज में भाग्य के बजाय परिश्रम और आत्मविश्वास को महत्त्व दिया जाता है।
3. **सौंदर्यपरक मूल्य:** ये सौंदर्यबोध से संबंधित होते हैं जो कला, संस्कृति और सौंदर्य की परिभाषाओं में समाज के अनुसार भिन्न हो सकते हैं।

मूल्यों का महत्व:

मूल्य सामाजिक जीवन को दिशा, स्थायित्व और उद्देश्य प्रदान करते हैं। ये सामाजिक संस्थाओं को वैधता देते हैं, सामूहिक व्यवहार को संगठित करते हैं और समाज में आंतरिक एकता का संचार करते हैं। मूल्यों के प्रति समाज का भावनात्मक जुड़ाव उन्हें स्थायी बनाता है, हालांकि समय के साथ इनमें बदलाव भी संभव है। मूल्य ही समाज की आत्मा माने जाते हैं।

एम. पी. पीसीएस

प्रश्न (3.4) "भारतीय संविधान में धर्मनिरपेक्षता को किस प्रकार परिभाषित और व्यवहार में उतारा गया है? भारत के धर्मनिरपेक्षता मॉडल को पश्चिमी मॉडल से किस प्रकार भिन्न माना जा सकता है?" स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: भारतीय संविधान में धर्मनिरपेक्षता को एक ऐसे मूल्य के रूप में स्थापित किया गया है, जिसमें राज्य सभी धर्मों के प्रति तटस्थ रहता है और किसी एक धर्म को प्राथमिकता नहीं देता।

- यद्यपि "धर्मनिरपेक्ष" शब्द 1976 के 42वें संविधान संशोधन द्वारा प्रस्तावना में जोड़ा गया, परंतु इसके सिद्धांत पहले से ही अनुच्छेद 14, 15, 25 से 28 और 51। में निहित थे।
- ये अनुच्छेद धार्मिक स्वतंत्रता, धार्मिक भेदभाव से मुक्ति और धार्मिक मामलों के प्रबंधन की स्वतंत्रता प्रदान करते हैं।
- भारतीय धर्मनिरपेक्षता की विशिष्टता यह है कि यह सकारात्मक धर्मनिरपेक्षता को अपनाती है, जो सभी धर्मों को न केवल सहन करती है, बल्कि उनके सम्मान और सह-अस्तित्व को बढ़ावा देती है।
- यह "सर्व धर्म समभाव" की अवधारणा पर आधारित है, जिसमें राज्य धर्मों के बीच सैद्धान्तिक दूरी बनाए रखता है, परंतु सामाजिक न्याय के लिए आवश्यक हस्तक्षेप भी करता है (जैसे- ट्रिपल तलाक का निषेध)।
- इसके विपरीत, पश्चिमी मॉडल - विशेषत: अमेरिकी और फ्रांसीसीख़नकारात्मक धर्मनिरपेक्षता को बढ़ावा देता है, जिसमें धर्म और राज्य का पूर्ण पृथक्करण होता है। वहाँ धार्मिक प्रतीकों और अनुष्ठानों को सार्वजनिक संस्थानों में निषिद्ध किया जाता है।

इस प्रकार, भारतीय धर्मनिरपेक्षता बहुलतावादी, सहिष्णु और सांस्कृतिक विविधता को समाहित करने वाली एक समावेशी अवधारणा है।

अथवा/OR

प्रश्न (3.4) "बंधुआ मजदूरी न केवल आर्थिक शोषण बल्कि मानवीय गरिमा के मौलिक उल्लंघन का प्रतीक है।" इस कथन के आलोक में बंधुआ मजदूरी की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, वर्तमान स्थिति तथा उसके उन्मूलन हेतु सरकारी प्रयासों की समीक्षा कीजिए।

उत्तर: बंधुआ मजदूरी एक अमानवीय सामाजिक-आर्थिक कुप्रथा है, जिसमें कोई व्यक्ति ऋण अथवा सामाजिक दायित्व के बदले बिना तय मजदूरी और समय-सीमा के अंतर्गत कार्य करने को विवश होता है। यह प्रथा समाज में व्याप्त अत्यधिक गरीबी, भूमिहीनता, औपचारिक ऋण संसाधनों की अनुपलब्धता, और जाति आधारित भेदभाव की उपज है।

- भारत में दलितों, आदिवासियों, और निम्न सामाजिक वर्गों को इस प्रथा का सबसे अधिक शिकार बनाया गया है, जहाँ एक बार लिया गया ऋण कई पीढ़ियों तक गुलामी का कारण बनता है।
- ग्लोबल स्लेवरी इंडेक्स (2021) के अनुसार भारत में लगभग 1.1 करोड़ लोग आधुनिक गुलामी में हैं।
- सरकार ने इस प्रथा के उन्मूलन हेतु बंधुआ मजदूरी प्रणाली (उन्मूलन) अधिनियम, 1976, अनुच्छेद 21, 23, 39, 43 जैसे संवैधानिक प्रावधानों तथा न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, 1948, संविदा श्रमिक अधिनियम, मानव तस्करी अधिनियम, 2018, आदि को लागू किया है। पुनर्वास हेतु बंधुआ मजदूर पुनर्वास योजना 2016 और उज्ज्वला योजना संचालित की गई है।

हालाँकि, लागत, निगरानी तंत्र की कमी, और सामाजिक उदासीनता के कारण यह प्रथा आज भी कुछ क्षेत्रों में विद्यमान है। इसके उन्मूलन के लिए सामाजिक चेतना, शिक्षा, और सशक्तिकरण के प्रयासों को और अधिक प्रभावी ढंग से लागू करने की आवश्यकता है।

एम. पी. पीसीएस

प्रश्न (3.5) भारत में दिव्यांगजनों की प्रमुख समस्याओं का सम्यक् विश्लेषण करते हुए बताइए कि उनकी सामाजिक एकीकरण एवं सशक्तिकरण के लिए कौन-कौन से ठोस उपाय किए जा सकते हैं?

उत्तर: भारत में दिव्यांगजन अनेक प्रकार की सामाजिक, आर्थिक एवं संस्थागत चुनौतियों का सामना करते हैं। सार्वजनिक अवसंरचना जैसे स्कूल, अस्पताल, परिवहन एवं कार्यालय उनके लिए सुलभ नहीं हैं, जिससे वे शिक्षा, स्वास्थ्य व मनोरंजन में पूर्ण भागीदारी नहीं कर पाते। रोजगार के सीमित अवसर, समाज में व्याप्त कलंक एवं भेदभाव, विशेषकर दिव्यांग महिलाओं के प्रति, उनके सामाजिक समावेशन में बाधक हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, जन्मपूर्व देखभाल की उपेक्षा तथा जागरूकता के अभाव से कई निवारणीय दिव्यांगताएं पैदा होती हैं। शिक्षा हेतु विशेष विद्यालयों, सामग्री व प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी है। राजनीतिक भागीदारी भी सीमित है क्योंकि मतदाता डेटा, ब्रेल ईवीएम एवं दलगत समावेश की समुचित व्यवस्था नहीं है।

यद्यपि 'सुगम्य भारत अभियान', 'RPWD अधिनियम 2016', और संविधान में प्रदत्त अधिकारों से समर्थन मिलता है, परन्तु प्रवर्तन की शिथिलता से वांछित परिणाम नहीं मिल पा रहे।

समाधानस्वरूपः

- CBR दृष्टिकोण को अपनाकर समुदाय-आधारित पुनर्वास को बढ़ावा देना,
- प्रारंभिक स्क्रीनिंग, गर्भवती माताओं की देखभाल,
- सामाजिक जागरूकता अभियान व मीडिया सहभागिता,
- रोजगार प्रशिक्षण, विशेष शिक्षा संसाधन और
- संवेदनशील अवसंरचना का विकास आवश्यक है।

इस प्रकार, दिव्यांगजनों के लिए समावेशी, सुलभ और समान समाज का निर्माण किया जा सकता है।

अथवा/OR

प्रश्न (3.5) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख प्रावधानों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करते हुए चर्चा कीजिए कि यह नीति भारत की शिक्षा प्रणाली को समावेशी, लचीला और समसामयिक बनाने में किस प्रकार सहायक है।

उत्तर: राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाली नीति है, जिसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण, समावेशी और वैश्विक मानकों के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था स्थापित करना है। यह नीति प्रारंभिक बचपन से लेकर उच्च शिक्षा तक सुधारों की एक व्यापक श्रृंखला प्रस्तुत करती है।

- विद्यालयी शिक्षा में 10 + 2 प्रणाली को 5 + 3 + 3 + 4 संरचना में परिवर्तित किया गया है, जिससे 3 - 6 वर्ष की आयु के बच्चों को भी औपचारिक शिक्षा से जोड़ा गया है।
- मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता पर विशेष बल, छठी कक्षा से व्यावसायिक शिक्षा की शुरुआत, जेंडर इंक्लूजन फंड की स्थापना, तथा मूल्यांकन सुधार जैसे प्रावधान शिक्षा की समावेशिता और गुणवत्ता को बढ़ाते हैं।
- उच्च शिक्षा में बहुविषयक, लचीले पाठ्यक्रमों की व्यवस्था, अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट, और राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन जैसे उपायों से नवाचार और शोध को बढ़ावा मिलेगा। शिक्षा में प्रौद्योगिकी एकीकरण हेतु राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच (NETF) की स्थापना की गई है।
- इसके अतिरिक्त नीति भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने, दिव्यांगजनों हेतु शिक्षा सुलभ बनाने, और पारंपरिक ज्ञान को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने का भी समर्थन करती है।
- इस प्रकार, NEP 2020 शिक्षा को समावेशी, रोजगारोन्मुखी, बहुआयामी एवं भारत-केंद्रित बनाकर राष्ट्र निर्माण की दिशा में एक सशक्त कदम है।